पाठ / LESSON-9

1.0 TEXT बड़े भाई साहब (Story)
2.0 VOCABULARY
3.0 IDIOMS & EXPRESSIONS
4.0 SUMMARY OF THE STORY
5.0 QUESTIONS & ANSWERS

1.0 TEXT बड़े भाई साहब (Respected elder brother)

–प्रेमचंद

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े थे, लेकिन केवल तीन दरजे आगे । उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया था; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसंद न करते थे । वह इस भावना की बुनियाद खूब मजबूत डालना चाहते थे जिस पर आलीशान महल बन सके । एक साल का काम दो साल में करते थे । कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे । बुनियाद ही मजबूत न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने ।

मैं छोटा था, वह बड़े थे । मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे । उन्हें मेरी निगरानी का पूरा जन्मसिद्ध अधिकार था । और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे । हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे । मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल न लगता था । एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ जैसा था । मैं मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता । लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का रौद्र रूप देखकर प्राण सूख जाते । उनका पहला सवाल होता – "कहाँ थे ?"

"इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिंदगी-भर पढ़ते रहोगे और एक अक्षर न आएगा । अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे पढ़ ले, नही तो ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा, सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते । यहाँ तो रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं ।"

"इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं । मैं पास नहीं फटकता । हमेशा पढ़ता रहता हूँ, उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ । फिर तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे ?"

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता । जवाब ही क्या था ? अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे ? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे । ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते

कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत छूट जाती । इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता - क्यों न घर चला जाऊँ । जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिंदगी खराब करूँ ? मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था; लेकिन उतनी मेहनत ! मुझे तो चक्कर आ जाता था । लेकिन घंटे-दो घंटे बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा । चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता । बिना पहले से नक्शा बनाए, बिना कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ ? टाइम-टेबिल में खेल-कूद की मद बिल्कुल उड़ जाती । प्रात:काल उठना, छह बजे मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर पढ़ने बैठ जाना। छह से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल । साढ़े तीन बजे स्कूल से वापस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छह तक ग्रामर, आधा घंटा होस्टल के सामने टहलना, साढ़े छह से सात तक अंग्रेजी कम्पोजीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध विषय, फिर विश्राम ।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात । पहले ही दिन से उसकी अवहेलना शुरू हो जाती । मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के वे हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की उछल-कूद, कबड्डी के वे दाँव-घात, वालीबाल की वह तेजी और फुरती मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता । वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें किसी की याद न रहती, और फिर भाई साहब को नसीहत और फज़ीहत का अवसर मिल जाता ।

सालाना इम्तहान हुआ । भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया । मेरे और उनके बीच केवल दो साल का अंतर रह गया । जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ - आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई ? मुझे देखिए, मजे से खेलता भी रहा और दरजे में प्रथम भी हूँ । लेकिन वह इतने दु:खी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा । हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा । भाई साहब का वह रोब मुझ पर न रहा ।

भाई साहब ने इसे भाँप लिया- उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े - "देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में प्रथम आ गए तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है ।"

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने, यह उपदेश-माला कब समाप्त होती । भोजन आज मुझे नि:स्वाद-सा लग रहा था । जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ । भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था; उसने मुझे भयभीत कर दिया । कैसे स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही । खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता । पढ़ता भी था, मगर बहुत कम । बस, इतना कि रोज का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में लज्जित न होना पड़े । अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा ।

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर

फेल हो गए । मैंने बहुत मेहनत न की पर न जाने कैसे दरजे में प्रथम आ गया । मुझे खुद अचरज हुआ । भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया था । कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे; दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उठकर छह से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले । मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फेल हो गए । मुझे उन पर दया आती थी । नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा । अपने पास होने वाली खुशी आधी हो गई । मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले ।

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया । मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन इस विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं । मुझे उस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास होता जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से ।

अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे । कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया । शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा; या रहा तो बहुत कम । मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी । मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा । मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं तो पास हो ही जाऊँगा, पढूँ या न पढूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ । मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था ।

एक दिन संध्या समय होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था । आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला जा रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की एक पूरी सेना लग गयी; और झाड़दार बाँस लिए उनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी । किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी । सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाजार से लौट रहे थे । उन्होंने वहीं मेरा हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले - "इन बाजारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो । आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का ख्याल करना चाहिए ।"

"मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद तुम मुझसे आगे निकल जाओ लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता । मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा । मुझे दुनिया का और जिंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते ।"

"भाईजान, यह गरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो । मेरे देखते तुम बेराह नहीं चल पाओगे । अगर तुम यों न मानोगे, तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ । मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं. . . . ."

मैं उनकी इस नयी युक्ति से नत-मस्तक हो गया । मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई । मैंने सजल आँखों से कहा "हरगिज नहीं । आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिल्कुल सच है और आपको कहने का अधिकार है ।"

भाई साहब ने मुझे गले लगा लिया और बोले – "मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता । मेरा जी भी ललचाता है, लेकिन क्या करूँ, खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर पर है ।"

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा । उसकी डोर लटक रही थी । लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था । भाई साहब लंबे हैं ही, उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ दौड़े । मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था ।

2.0 VOCABULARY

दरजा	Class	हिसाब	maths
तालीम	education	अवहेलना	to neglect
जल्दबाजी	hurry	दाँव-घात	strategical move
बुनियाद	foundation	जान लेवा	killing
आलीशान	grand	आँखफोड़ पुस्तकें	tough books
महल	palace	नसीहत	advise
मजबूत	solid	फज़ीहत	disgrace
पायेदार	durable	सालाना	annual
निगरानी	observation	प्रथम	first
शालीनता	modesty	हमदर्दी	sympathy
हुक्म	order	लज्जास्पद	shameful
कानून	law	भाँप लेना	to guess
अध्ययनशील	studious	भोर	morning
रौद्र	furious	घमंड	pride
लताड़ना	to rebuke	हस्ती	existence
नक्शा	road map	तिरस्कार	disgrace
मद	item	ताज्जुब	wonder

लुप्त	disappear	पतंगबाजी	kite flying
अचरज	surprise	अदब	respect
प्राणांतक	very hard	बेतहाशा	fast
शब्द चाट गए	memorized to crame	मुठभेड़ होना	to meet face
कांतिहीन	graceless	लौंडा	brat
कुटिल	shrewed	जमात	class
नतीजा	result	गरूर	pride
विधि	fate	युक्ति	tactic
दनादन	consistently	हरगिज नहीं	never
नर्म पड़ना	soften	बेराह	out of track
स्वच्छंदता	freedom	नतमस्तक होना	to bow down
तकदीर	luck		

3.0 IDIOMS & EXPRESSION

पढ़ने में जी न लगना	not able to concentrate on studies
ऐरा-गैरा नत्थू खैरा	tom, Dick and harry any body
हँसी-खेल होना	to be an easy job
रात-दिन आँखें फोड़ना	to work hard all the time
पास फटकना	to come near
जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना	to be shattered
हिम्मत छूटना	to loss ones courage
बूते के बाहर होना	beyond one's capacity
आड़े हाथों लेना	to rebuke
घाव पर नमक छिड़कना	to add insult to injury
तलवार खींचना	to get angry

4.0 SUMMARY OF THE LESSON

'बड़े भाई साहब' हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानियों में से एक है । इसमें दो सगे भाइयों के विद्यार्थी जीवन का चित्रण है । होस्टल में साथ-साथ रहने के कारण बड़ा भाई छोटे भाई के प्रति उत्तरदायित्व भी निभा रहा है । वह उसे खेलने-कूदने के लिए टोकता है और अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है ।

छोटा भाई कम परिश्रम से भी परीक्षा में प्रथम स्थान पाता रहता है किंतु दुर्भाग्य से बड़े भाई को बार-बार असफलता का मुँह देखना पड़ता है । इस प्रकार उनकी कक्षाओं के बीच का अंतर कम होता चला जाता है और कहानी के अंत तक वह अंतर केवल एक साल का रहता है । इतना होते हुए भी बड़ा भाई अपना दायित्व निभाता रहता है । कहानी में इस स्थिति को बड़े भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

साथ ही साथ प्रेमचंद ने जीवन के अनुभवों को भी कहानी में महत्व दिया है ।

5.0 QUESTIONS & ANSWERS

प्रश्न 1. : बड़े भाई साहब के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए ?

उत्तर : बड़े भाई साहब जल्दबाजी में काम करना पसंद नहीं करते थे । वे उपदेश की कला में निपुण थे । वे छोटे भाई को सही राह दिखाना अपना कर्तव्य समझते थे ।

प्रश्न 2. : अंग्रेजी पढ़ने के बारे में बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से क्या कहा ?

उत्तर : अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है । कोई भी ऐसे ही अंग्रेजी नहीं सीखता । इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है ।

प्रश्न 3. : फेल होने पर बड़े भाई का उदास होना, छोटे भाई को कैसा लगा ?

उत्तर : बड़े भाई को उदास देखकर छोटे भाई के मन में उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न हुई । उनके लिए बुरा सोचना अच्छा नहीं लगा ।

प्रश्न 4. : इस कहानी का संदेश क्या है ?

उत्तर : रटने से अच्छा समझकर पढ़ना होता है । पढ़ाई-लिखाई के साथ खेलकूद भी महत्वपूर्ण है । जीवन का अनुभव पढ़ाई से कम महत्वपूर्ण नहीं है ।

— * —

पाठ / LESSON-10

1.0 A PEEP INTO THE TEXT
2.0 TEXT 'ऐसे–ऐसे' (एकांकी / One Act Play)
3.0 SUMMARY OF THE LESSON
4.0 VOCABULARY
5.0 IDIOMS & EXPRESSIONS

1.0 A PEEP INTO THE TEXT

Mohan is not feeling well. He says ऐसे–ऐसे is happening in his stomach. His parents are worried — call vaidya ji and a doctor also. In the end his class teacher comes and explains that this ऐसे–ऐसे disease is in fact because he has not done his home work.

2.0 TEXT ऐसे–ऐसे (In such a way)

–विष्णु प्रभाकर

पात्र–परिचय

मोहन	:	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	:	एक पड़ोसी
माँ	:	मोहन की माँ
पिता	:	मोहन के पिता
मास्टर	:	मोहन के मास्टर जी ।

वैद्य जी, डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन ।

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ्लैट में बैठक का दृश्य । उसका एक दरवाज़ा सड़क वाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में । अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं । एक ओर रेडियो का सेट है । दोनों ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं । बीच में कुरसियाँ हैं। एक छोटी मेज़ भी है । उस पर फोन रखा है । परदा उठने पर मोहन एक तख्त पर लेटा है । आठ–नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी । तीसरी क्लास में पढ़ता है । इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है । बार–बार पेट को पकड़ता है । उसके माता–पिता पास बैठे हैं ।)

माँ : (पुचकारकर) न–न, ऐसे मत कर ! अभी ठीक हुआ जाता है । अभी डॉक्टर को बुलाया है । ले तब तक सेंक ले । (चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती है । फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है ।) इसने कहीं कुछ अंट–शंट तो नहीं खा लिया ?

पिता : कहाँ ? कुछ भी नहीं । सिर्फ एक केला और एक संतरा खाया था । अरे, यह तो दफ़्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था । बस अड्डे पर आकर यकायक बोला- पिता जी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है ।

माँ : कैसे ?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा । मैंने कहा - अरे, गड़गड़ होती है? तो बोला - नहीं । फिर पूछा - चाकू-सा चुभता है ? तो जवाब दिया - नहीं । गोला-सा फूटता है ? तो बोला- नहीं । जो पूछा उसका जवाब - नहीं । बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

माँ : (हँसकर) हँसी की हँसी, दुख का दुख, यह 'ऐसे-ऐसे' क्या होता है? कोई नयी बीमारी तो नहीं ? बेचारे का मुँह कैसे उतर गया है ! हवाइयाँ उड़ रही हैं ।

पिता : अजी, एकदम सफ़ेद पड़ गया था । खड़ा नहीं रहा गया । बस में भी नाचता रहा - मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है । 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

मोहन : (जोर से कराहकर) माँ ! ओ माँ !

माँ : न-न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं । अजी, ज़रा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं आया ! इसे तो कुछ ज़्यादा ही तकलीफ जान पड़ती है । यह 'ऐसे-ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है । देखो न, कैसे लोट रहा है ! ज़रा भी कल नहीं पड़ती । हींग, चूरन, पिपरमिंट सब दे चुकी हूँ । वैद्य जी आ जाते !

(तभी फोन की घंटी बजती है । मोहन के पिता उठाते हैं)

पिता : यह 72143332 है । जी, जी हाँ । बोल रहा हूँ. . . . कौन ? डॉक्टर साहब! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है... जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं.... बस यही कह रहा है.... बस जी .... नहीं, गिरा भी नहीं .... 'ऐसे-ऐसे' होता है । बस जी 'ऐसे-ऐसे' होता है । बस जी, 'ऐसे-ऐसे' ! यह 'ऐसे-ऐसे' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता । जी....जी हाँ ! चेहरा एकदम सफ़ेद हो रहा है । नाचा.... नाचता फिरता है.... जी नहीं, दस्त तो नहीं आया..... जी हाँ, पेशाब तो आया था..... जी नहीं, रंग तो नहीं देखा । आप कहें तो अब देख लेंगे.... अच्छा जी ! ज़रा जल्दी आइए । अच्छा जी, बड़ी कृपा है । (फोन का चोंगा रख देते हैं ।) डॉक्टर साहब चल दिए हैं । पाँच मिनट में आ जाते हैं ।

(पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश । मोहन ज़ोर से कराहता है ।)

मोहन : माँ....माँ....ओ....ओ.... (उल्टी आती है । उठकर नीचे झुकता है । माँ सिर पकड़ती है । मोहन तीन-चार बार 'ओ-ओ' करता है । थूकता है, फिर लेट जाता है ।) हाय, हाय !

माँ : (कमर सहलाती हुई) क्या हो गया ? दोपहर को भला-चंगा गया था । कुछ समझ में नहीं आता ! कैसा पड़ा है ! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है ! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है ।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है । इसे छेड़, उसे पछाड़; इसके मुक्का, उसके थप्पड़ । यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन ।

पिता : बड़ा नटखट है ।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है ! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा ।

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ़ है, तभी तो पड़ा है । मामूली तकलीफ़ को तो यह कुछ समझता नहीं । पर कोई डर नहीं । मैं वैद्य जी से कह आया हूँ । वे आ ही रहे हैं । ठीक कर देंगे ।

मोहन : (तेज़ी से कराहकर) अरे....रे-रे-रे....ओह !

माँ : (घबराकर) क्या है, बेटा ? क्या हुआ ?

मोहन : (रुआँसा-सा) बड़े ज़ोर से ऐसे-ऐसे होता है । ऐसे-ऐसे ।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे ? ऐसे क्या होता है ?

मोहन : ऐसे-ऐसे । (पेट दबाता है ।)

(वैद्य जी का प्रवेश ।)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन ? मैंने कहा, जय राम जी की ! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या ? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या ?

(सब उठकर हाथ जोड़ते हैं । वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं ।)

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था । दफ़्तर से चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला- मेरे पेट में दर्द होता है । 'ऐसे-ऐसे' होता है । समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है !

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ । असल में बच्चा है । समझा नहीं पाता है । (नाड़ी दबाकर) वात का प्रकोप है.... मैंने कहा, बेटा, जीभ तो दिखाओ । (मोहन जीभ निकालता है ।) कब्ज़ है । पेट साफ़ नहीं हुआ । (पेट टटोलकर) हूँ पेट साफ़ नहीं है । मल रुक जाने से वायु बढ़ गई । क्यों बेटा ? (हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं ।) ऐसे-ऐसे होता है ?

मोहन : (कराहकर) जी हाँ.... ओह !

वैद्य जी : (हर्ष से उछलकर) मैंने कहा न, मैं समझ गया । अभी पुड़िया भेजता हूँ । मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है । समझने की बात है । मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो । (मोहन की माँ से) आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है । दो-तीन दस्त होंगे । बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग !

(वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं । मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं ।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट । (नोट देते हैं ।)

वैद्य जी : (नोट लेते हुए) अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं ? आप और हम क्या दो हैं ?

(अंदर के दरवाज़े से जाते हैं । तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं ।)

डॉक्टर : हैलो मोहन ! क्या बात है ? 'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया ?

(माँ और पिता जी फिर उठते हैं । मोहन कराहता है । डॉक्टर पास बैठते हैं।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता ।

डॉक्टर : (पेट दबाने लगते हैं ।) अभी देखता हूँ । जीभ तो दिखाओ बेटा । (मोहन जीभ निकालता है ।) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है ? ऐसे-ऐसे ? (मोहन बोलता नहीं, कराहता है ।)

माँ : बताओ, बेटा ! डॉक्टर साहब को समझा दो ।

मोहन : जी...जी... ऐसे-ऐसे । कुछ ऐसे-ऐसे होता है । (हाथ से बताता है । उँगलियाँ भींचता है ।) डॉक्टर साहब, तबीयत तो बड़ी खराब है ।

डॉक्टर : (सहसा गंभीर होकर) वह तो मैं देख रहा हूँ । चेहरा बताता है, इसे काफ़ी दर्द है । असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं । कौलिक पेन तो है नहीं । और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता । (बराबर पेट टटोलता रहता है ।)

माँ : (काँपकर) फोड़ा !

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है । बिल्कुल नहीं है । (मोहन से) ज़रा मुँह फिर खोलना। जीभ निकालो । (मोहन जीभ निकालता है।) हाँ, कब्ज़ ही लगता है । कुछ बदहज़मी भी है । (उठते हुए) कोई बात नहीं । दवा भेजता हूँ । (पिता से) क्यों न आप ही चलें ! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी । कभी-कभी हवा रुक जाती है और फंदा बना लेती है । बस उसी की ऐंठन है ।

(डॉक्टर जाते हैं । मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं डॉक्टर साहब को देते हैं ।)

माँ : सेंक तो दूँ डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर : (दूर से) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए ।

(डॉक्टर जाते हैं । माँ बोतल उठाती है । पड़ोसिन आती है ।)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन ?

माँ : आओ जी, रामू की काकी ! कैसा क्या होता ! लोचा-लोचा फिरे है । जाने 'ऐसे-ऐसे' दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया ।

पड़ोसिन : ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं । देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा । राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया । नए-नए बुखार निकल आए हैं । वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं ।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है । आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर नहीं गया था । वहाँ भी कुछ नहीं खाया । आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है । (बाहर से आवाज़ आती है - 'मोहन ! मोहन' । फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है ।)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं । (पुकारकर) आ जाइए !

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है ! क्यों भाई ? (पास आकर) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है । दादा, कल तो स्कूल जाना ..... तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी । क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे ?

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं ।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है । समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे ।

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है । इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ । अकसर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है ।

माँ : सच ! क्या बीमारी है यह ?

मास्टर : अभी बताता हूँ । (मोहन से) अच्छा साहब ! दर्द तो दूर हो ही जाएगा । डरो मत । बेशक कल स्कूल मत आना । पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है ?

(मोहन चुप रहता है ।)

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं ?

मास्टर : हाँ, बोलो बेटा ।

(मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है । फिर इनकार में सिर हिलाता है ।)

मोहन : जी, सब नहीं हुआ ।

मास्टर : हूँ ! शायद सवाल रह गए हैं ।

मोहन : जी !

मास्टर : तो यह बात है । 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है ।

माँ : (चौंककर) क्या ?

(मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है ।)

मास्टर : (हँसकर) कुछ नहीं, माता जी, मोहन ने महीना भर मौज की । स्कूल का काम रह गया । आज ख्याल आया । बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा - 'ऐसे-ऐसे' ! अच्छा, उठिए साहब ! आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है । स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी । आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा । (मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है ।) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए । उठिए, खाना मिलेगा।

(मोहन उठता है । माँ ठगी-सी देखती है । दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं ।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है । हमारी तो जान निकल गई । पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग । (पिता से) देखा जी आपने !

पिता : (चकित होकर) क्या-क्या हुआ ?

माँ : क्या-क्या होता ! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है ।

पिता : हें !

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फर्श पर गिर पड़ती है । एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं । फिर हँस पड़ते हैं ।)

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह !

पिता : वाह, बेटा जी, वाह ! तुमने तो खूब छकाया !

(एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है ।)

3.0 SUMMARY OF THE LESSON

मोहन अपने माता-पिता के साथ रहता है । एक दिन अचानक उसने पेट में तेज दर्द होने की शिकायत की । वह इसके अलावा कुछ नहीं बता पा रहा था कि उसके पेट में 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है। उसकी पीड़ा को देखकर पहले घर में वैद्य को बुलाया जाता है, और बाद में डॉक्टर को । दोनों ही मोहन को कब्ज और बदहजमी की शिकायत बताकर अपनी-अपनी दवाइयाँ भिजवाते हैं । तभी मोहन के मास्टर जी वहाँ आ जाते हैं । मास्टर जी बताते हैं कि मोहन ने स्कूल का कार्य समय रहते नहीं किया । इसी कारण मोहन तबीयत खराब होने का बहाना बना रहा है । मास्टर जी ने होम वर्क पूरा करने के लिए मोहन को दो दिन की छुट्टी दे दी और मोहन की तबीयत ठीक हो गई ।

4.0 VOCABULARY

दृश्य	scene	कल	relief
गलीचा	carpet	चोंगा	receiver
रसोईघर	kitchen	कराहना	to moan
सेंकना	to foment	वात	gastic
अंट-शंट	unhygenic (food)	प्रकोप	problem
यकायक	all of a sudden	कब्ज़	constipation
गड़गड़	stomach sound	बदहज़मी	indigestion
लोटना	feeling uneasy	अट्टहास	big laugh

5.0 IDIOMS & EXPRESSIONS

1)	मुँह उतरना	=	माँ को बीमार देखकर अशोक का मुँह उतर गया ।
2)	हवाइयाँ उड़ना	=	झूठ पकड़े जाने पर उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं ।
3)	सफेद पड़ना	=	डर के मारे उसका चेहरा सफेद पड़ गया ।
4)	भला-चंगा	=	कल तक प्रमोद भला-चंगा था, आज अस्पताल कैसे पहुँच गया ?
5)	घर सिर पर उठाना	=	ऐसा मैंने क्या कह दिया कि तुमने पूरा घर सिर पर उठा लिया ।
6)	गधे के सिर से सींग	=	तुम तो ऐसे गायब हो गए जैसे गधे के सिर से सींग ।
7)	लोचा-लोचा फिरना	=	बीमारी के कारण वह इतना कमजोर हो गया है कि घर में वह लोचा-लोचा फिर रहा है ।

— * —

पाठ / LESSON-11

1.0 A PEEP INTO THE TEXT
2.0 TEXT इंटरव्यू (साक्षात्कार / Interview)
3.0 VOCABULARY
4.0 PATTERNS & USAGES
5.0 QUESTIONS & ANSWERS

1.0 A PEEP INTO THE TEXT

As the text makes use of spoken form of Hindi, you will notice the following significant variations :-

(i) The style of the text is formal, using only the polite form of address आप

(ii) English words have not been used as freely as is generally done in informal situations.

(iii) Certain words and phrases have been omitted in some sentences, leaving the meaning to be inferred in relation to the context, e.g.

और हिंदी गाने भी ।

जी बिल्कुल ।

जी हाँ, लगेंगी ।

The text presents a scene of an Interview Board consisting of a Chairman and three members with Mr. Divakar as a candidate for the post of Rajbhasha Adhikari. After having enquired about particulars regarding the educational qualifications and experience of the candidate, the Chairman asks the other members to put questions to him.

2.0 TEXT इंटरव्यू (Interview)

'राजभाषा अधिकारी' पद के लिए इंटरव्यू

दिवाकर : सर ! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ?

अध्यक्ष : आइए, आइए ।

(दिवाकर का प्रवेश)

दिवाकर : आप सभी को मेरा नमस्कार !

अध्यक्ष : बैठिए !

दिवाकर : धन्यवाद सर !

अध्यक्ष : आपका नाम ?

दिवाकर : जी, मेरा नाम दिवाकर है ।

अध्यक्ष : आजकल आप कहाँ काम करते हैं ?

दिवाकर : जी, मैं चेन्नई के एक कॉलेज में हिंदी पढ़ाता हूँ ।

अध्यक्ष : अच्छा, अच्छ ा! आप हिंदी पढ़ाते हैं ? हिंदी में आप क्या पढ़ाते हैं ?

दिवाकर : जी ! मैं आधुनिक कविता पढ़ाता हूँ ।

अध्यक्ष : आपने एम. ए. कहाँ से किया है ?

दिवाकर : जी, मैंने मद्रास विश्वविद्यालय से एम. ए. किया है ।

अध्यक्ष : डॉ. सक्सेना ! आप कुछ पूछना चाहेंगे ?

सक्सेना : अध्यापन छोड़कर आप इस पद पर आना चाहते हैं । कोई खास कारण ?

दिवाकर : सर, कॉलेज में मैं अस्थायी हूँ । फिर राजभाषा का कार्य मुझे ज्यादा पसंद है।

सक्सेना : क्या आपको पता है कि जिस पद के लिए आप यहाँ आए हैं, उसमें आपको कौन से काम करने होंगे ?

दिवाकर : जी ! राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से संबंधित कार्य करने होंगे ।

सक्सेना : अच्छा ! कोई प्रमुख कार्य बताइए ।

दिवाकर : सर ! अनुवाद की अपेक्षा मौलिक रूप से हिंदी में ही प्रारूपण-टिप्पण को बढ़ावा देना होगा ।

सक्सेना : आपको पता होगा कि संविधान के कौन से अनुच्छेद में हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है ?

दिवाकर : जी, संविधान के अनुच्छेद 343 में ।

अध्यक्ष : डॉ. स्वामी, आप कुछ पूछना चाहेंगे ?

डॉ. स्वामी : आपका प्रिय कवि कौन है ?

दिवाकर : मेरे प्रिय कवि हैं - गोस्वामी तुलसीदास ।

डॉ. स्वामी : और आपका प्रिय उपन्यासकार ?

दिवाकर : प्रेमचंद ।

डॉ. स्वामी : प्रेमचंद का कौन-सा उपन्यास आपको अधिक पसंद है ?

दिवाकर : जी 'निर्मला' मुझे बहुत अच्छा लगता है ।

डॉ. स्वामी : कारण ?

दिवाकर : सर ! क्योंकि इसमें वर्तमान सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डाला गया है ।

डॉ. स्वामी : क्या आप अब भी कुछ पढ़ते रहते हैं ?

दिवाकर : जी हाँ, मुझे भाषा और साहित्य में विशेष रुचि है ।

अध्यक्ष : डॉ. गोपालन, आप कुछ पूछना चाहेंगे ?

डॉ. गोपालन : क्या दक्षिण भारत में छात्र हिंदी पढ़ने में रुचि लेते हैं ?

दिवाकर : जी हाँ ! बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएँ हिंदी पढ़ते हैं ।

डॉ. गोपालन : क्या पढ़ने के अलावा भी उनमें हिंदी के प्रति लगाव दिखता है ?

दिवाकर : जी बिल्कुल । वे हिंदी फिल्में और धारावाहिक खूब पसंद करते हैं । और हिंदी गाने भी। वहाँ हिंदी मेलों में काफी भीड़ रहती है ।

डॉ. गोपालन : विश्वविद्यालय के अलावा चेन्नई में हिंदी सीखने की क्या स्थिति है ?

दिवाकर : चेन्नई में तो कई स्थानों पर हिंदी की पढ़ाई होती है । और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा उन्हें प्रमाण-पत्र भी देती है ।

अध्यक्ष : आपने अभी बताया था कि आपकी रुचि हिंदी साहित्य में भी है ।

दिवाकर : जी महोदय !

अध्यक्ष : आपने कहा था कि कवि तुलसीदास आपको बहुत पसंद हैं । उनकी कुछ रचनाओं के नाम बताइए।

दिवाकर : जी, रामचरितमानस तो उनकी विश्वप्रसिद्ध रचना है। इसके आतिरिक्त विनय पत्रिका और कवितावली आदि भी हैं। ।

अध्यक्ष : आपने ठीक कहा । क्या आप कुछ आधुनिक रचनाकारों के बारे में भी बता सकते हैं ?

दिवाकर : जी हाँ ! मैंने छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा को भी पढ़ा है ।

अध्यक्ष : आपने अज्ञेय की कोई रचना पढ़ी है ?

दिवाकर : जी 'नदी के द्वीप' मुझे पसंद है ।

अध्यक्ष : यदि आप चुन लिए गए, तो कब तक अपना कार्यभार ग्रहण कर सकेंगे ?

दिवाकर : मुझे कम से कम एक महीने का समय चाहिए ।

अध्यक्ष : अच्छा, धन्यवाद

दिवाकर : धन्यवाद सर । नमस्कार ।

3.0 VOCABULARY

अध्यक्ष	chairman	प्रिय	favourite
अध्यापन	teaching	वर्तमान	present
पद	post	सामाजिक	social
अस्थायी	temporary	प्रकाश डालना	throw light on
राजभाषा	Official Language	साहित्य	literature
कार्यालय	office	छात्र	student
कार्यान्वयन	Implementation	रुचि/लगाव	interest
प्रमुख	main	धारावाहिक	serial
अनुवाद	translation	भीड़	crowd
प्रारूपण	drafting	स्थिति	position
टिप्पण	noting	प्रमाण–पत्र	certificate
अनुच्छेद	article	आधुनिक	modern
दर्जा	class	रचनाकार	writer

4.0 PATTERNS & USAGES

4.1 Usage of जी

जी is an honorific word and is equivalent to sir, and is used in response to queries from elders and other respectable persons. But this word is also used in various other contexts. A few examples are given below :-

(a) to gain time or to recollect one self before responding to a query.

आपने एम. ए. कब किया ?

जी, पिछले वर्ष ।

मि. दिवाकर, जिस पद के लिए आप आए हैं उसमें आपको कौन–से काम करने होंगे ?

जी, राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से संबंधित कार्य करने होंगे ।

(b) to denote the idea 'I beg your pardon, 'I didn't hear what you said' or 'please repeat'. This happens mostly in a situation like that of a telephonic conversation. In such situation, the syllable is lengthened a little with a rising intonation.

क्या आपने दंगल फिल्म देखी है ?

जी ? साफ सुनाई नहीं दे रहा है ।

मैं पूछ रही हूँ, क्या आपने आमिर खान की फिल्म दंगल देखी है ?

जी हाँ, देखी है ।

(c) to indicate that the listener is attentive to what is being said and thus it corresponds to English 'yes' e.g.

कल आप दफ़्तर गई थीं ?

जी ।

क्या आप विश्व पुस्तक मेला देखने गए थे ?

जी ।

(d) जी is also used as a short form of अच्छा जी 'yes sir' as shown below.

कल तीन बजे तक आ जाना ।

जी ।

कमरा बिल्कुल साफ होना चाहिए ।

जी ।

(e) जी is also used after name of a person, Mr. and Mrs. and kinship terms to show respect, e.g.

पवन जी	चाचा जी
कुमुद जी	मामी जी
श्रीमती जी	

4.2 Compound verb with Infinitives.

Some compound verbs present the following patterns :-

(a) (i)- ना Infinitive + verb (पढ़ना + चाहता है, पढ़ना + जानता है)

Read the following sentences and note the verb forms :-

1	2	3	4
क्या	आप आप तुम डॉ. मेहता	कुछ हिंदीतर भाषियों को साहित्यिक हिंदी बंगला में डिप्लोमा परीक्षा अज्ञेय का उपन्यास	पूछना चाहेंगे ? पढ़ाना चाहेंगे ? पास करना चाहते हो ? पढ़ना चाहते हैं ?

Note : It may be noted that the Infinitive i.e. करना, पूछना, पढ़ना etc. in the above examples do not change their forms. There are two more verbs, जानना, सीखना which are joined with the unmodified Infinitive, e.g.

– जानना

मैं नाव चलाना जानता हूँ ।	अमित जादू दिखाना जानता है ।
मैं कागज के फूल बनाना जानता हूँ ।	वह नारियल के पेड़ पर चढ़ना जानता है ।
मोहन सिंह स्कूटर की सफाई करना जानता है ।	वह इडली बनाना जानता है ।

– सीखना

मैं नाव चलाना सीख रहा हूँ ।

मैं कागज के फूल बनाना सीखता हूँ ।

मोहन सिंह स्कूटर की सफाई करना सीख रहा है ।

वे टेनिस खेलना सीख रहे हैं ।

(ii) Now go through the following sentences. You will note that the verb agrees with the object and the Infinitive is also modified on the आ, –ए, –ई pattern of agreement.

नंदिनी गुड़िया बनाना सीख रही है ।

मैं सिलाई करना सीख रही हूँ ।

वह एक और भाषा पढ़ना सीख रहा है ।

वे कंप्यूटर चलाना सीख रहे हैं ।

1	2 (Object)	3
मैंने	कुछ केले	खरीदने चाहे ।
मोहन ने	हिंदी में चिट्ठी	लिखनी चाही ।
मोहन ने	बंगला में डिप्लोमा की परीक्षा	पास करनी चाही ।
मैंने	चिट्ठी रजिस्ट्री डाक से	भेजनी चाही ।
सरला ने	मनीआर्डर से पचास रुपये	भेजने चाहे ।
पिता जी ने	कार की सफाई	करवानी चाही ।

You will note that in a sub + ने construction, the Infinitive agrees with the object in number and gender. Now go through a few sentences with sub + को construction.

1	2 (Object)	3
मुझे	हिंदी में कविता	करनी आती है ।
तुम्हें	बातें ही	बनानी आती हैं ।
क्या तुम्हें	कागज के फूल	बनाने आते हैं ।
क्या आपको	उर्दू के अक्षर	लिखने आते हैं ।

NOTE :- (i) It may be said that when the subject is followed by a Postposition (ने/को) both verb and the infinitive agree with the object in number and gender.

(ii) Some other verbs which fall into the pattern of sub + को construction and require the Infinitive to be modified on the - आ, –ए, –ई, pattern of agreement are given as होना, पड़ता and चाहिए e.g.

1	2	3
मुझे	हर महीने पचास रुपए	देने होंगे ।
सरला को	टाइप का काम भी	करना पड़ता है ।
आपको	इतनी देर नहीं	लगानी चाहिए ।[1]
मोहन को	और भी बहुत से काम	करने होते हैं ।

(b) ने infinitive + verb (पढ़ने + लगता है, पढ़ने + देता है)

(i) Read the following sentences and note the verb forms having ने infinitive + लगना

1	2	3
बटन दबाते ही	रॉकेट	ऊपर उठने लगता है ।[2]
शाम होते ही	मच्छर	काटने लगते हैं ।
ठीक नौ बजे	सायरन (siren)	बजने लगते हैं ।
मैं बाहर निकला कि	बारिश	होने लगी ।
धीरे–धीरे	नाव की रफ्तार	तेज होने लगी ।[3]

NOTE :- (i) The compound verbs in slot 3 denote the idea 'to begin/to start.' The infinitive in this pattern is always in the –ने form.

(ii) Now see the following examples which have a –ने form of the infinitive + देना

पहले मुझे बोलने दें ।

मच्छरों ने रात भर सोने नहीं दिया ।[4]

अगर आप शांति से काम करने दें तो कितना अच्छा हो ।[5]

4.3 Use of Past Form denoting futurity.

The Past form of a verb (e.g. आया, गया) normally denotes the action associated with some past time. However, in some situations, it may also denote futurity, this situation has

1. You should not delay so much.
2. The rocket starts rising up just as the button is pressed.
3. Slowly the boat began to pick up speed.
4. The mosquitoes did not let us sleep the whole night.
5. How nice it would be if you allow us to work peacefully.

been explained below. Go through the following sentences and note the verb form in the अगर/यदि clause as well as the तो clause.

यदि आप	चुन लिए गए	तो कब तक काम पर	आ सकेंगे ?
यदि आरक्षण	हो गया	तो मैं कल ही यहाँ से	चला जाऊँगा ।
अगर वह दस बजे तक नहीं	आया	तो मैं उसके पास	चला जाऊँगा ।
यदि बारिश	हुई	तो फसल अच्छी	हो जाएगी ।
यदि आप अभी	चले गए	तो आपको गाड़ी	मिल जाएगी ।
अगर उसने इलाज नहीं	करवाया	तो बीमारी	बढ़ जाएगी ।

Note : (i) Each one of the sentences, given above has two clauses. The अगर/यदि clause has a verb in the Past form which denotes futurity.

(ii) The अगर/यदि clause can normally take a past form when the तो clause is in the future tense.

(iii) In most cases in the above pattern the अगर/यदि clause can also have a subjunctive form of a verb e.g.

यदि आप चुन लिए जाएँ तो कब तक काम पर आ सकेंगे ?

अगर आप अपनी मातृभाषा में पढ़ें तो अच्छा होगा ।

(iv) Normally, in such situation we can also use future tense.

अगर दो दिन में पैसे जमा नहीं करेंगे तो जुर्माना देना पड़ेगा ।

5.0 QUESTIONS & ANSWERS

5.1 Some of the questions based on the text have been answered below for your guidance.

प्रश्न 1 : छायावाद के प्रमुख रचनाकार कौन-कौन हैं ?
उत्तर : जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ।

प्रश्न 2 : प्रेमचंद के किसी उपन्यास का नाम बताइए ?
उत्तर : सेवासदन

प्रश्न 3 : तुलसीदास और सूरदास की काव्य भाषा क्या थी ?
उत्तर : तुलसीदास की अवधी और सूरदास की ब्रज भाषा ।

प्रश्न 4 : राजभाषा अधिकारी का क्या काम है ?
उत्तर : केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना ।

— * —

पाठ / LESSON-12

1.0 A PEEP INTO THE TEXT
2.0 TEXT 'तुम कब जाओगे, अतिथि' (व्यंग्य कथा / Satire)
3.0 SUMMARY OF THE STORY
4.0 VOCABULARY
5.0 GRAMMAR & USAGES
6.0 QUESTIONS & ANSWERS

1.0 A PEEP INTO THE TEXT

The satire 'तुम कब जाओगे, अतिथि' is written by a well known satirist Sharad Joshi. This satire is focused on such a guest who overstays and thus misuses the hospitality of the host. Such an awkward situation disturbs the family atmosphere of the host.

2.0 TEXT तुम कब जाओगे, अतिथि (When will you go, Oh Guest)

-शरद जोशी

आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है - तुम कब जाओगे, अतिथि ?

तुम्हारे ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो ना ! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फडफ़ड़ाती रहती हैं । विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ । तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन ! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती । लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो । तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैजनी चट्टान देख ली, तुम मेरी काफी मिट्टी खोद चुके । अब तुम लौट जाओ, अतिथि ! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात् हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती ?

उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था । अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया । उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुस्कराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की थी। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च मध्यमवर्ग के डिनर में बदल दिया था । तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्जियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था । इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी । आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमान नवाजी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए

आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे । पर ऐसा नहीं हुआ । दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुस्कान लिए घर में ही बने रहे । हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे । स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया । हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते । पर तुमने ऐसा नहीं किया ।

तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, "मैं लॉन्ड्री में कपड़े देना चाहता हूँ।"

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी । तुम्हारे सामीप्य की बेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था । पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है ।

"कहाँ है लॉन्ड्री ?"

"चलो चलते हैं ।" मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा ।

"कहाँ जा रहे हैं ?" पत्नी ने पूछा ।

"इनके कपड़े लॉन्ड्री पर देने हैं ।" मैंने कहा ।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं । आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर बिस्तर खोल दिया था । पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों ठहरेगा ।

और आशंका निर्मूल नहीं थी अतिथि । तुम जा नहीं रहे। लॉन्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो । तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो । तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है । ठहाकों के रंगीन गुब्बारे जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते । बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोणों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है । अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं । कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो । शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए । परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, महँगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है । सौहार्द अब शनैः-शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है । भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं । पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद में तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ । बार-बार प्रश्न उठ रहा है - तुम कब जाओगे, अतिथि?

कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, "कब तक टिकेंगे ये ?"

मैंने कंधे उचका दिए "क्या कह सकता हूँ।"

"मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ । हल्की रहेगी ।"

"बनाओ ।"

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी । डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए । अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा । तुम्हारे मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं । तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि ।

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है ना ? मैं जानता हूँ । दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है । अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता । अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं । 'होम' को इसी कारण 'स्वीट-होम' कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें । तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफत भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है ।

अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी । आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे । मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी । उसके बाद मैं स्टेंड नहीं कर सकूंगा और लड़खड़ा जाऊँगा । मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ । मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं । एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते । देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं । तुम लौट जाओ अतिथि । इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा । इसके पूर्व कि मैं अपनी वाली पर उतरूँ लौट जाओ ।

उफ्, तुम कब जाओगे, अतिथि ?

3.0 SUMMARY OF THE STORY (कथा का सार)

लेखक के घर में एक अतिथि आया है । प्रारंभ में उसका बहुत आदर-सत्कार हुआ । अतिथि ऐसा है कि जाने का नाम ही नहीं लेता। इस बात से परिवार के लोग दुखी हो गए । लेखक चाहता है कि किसी प्रकार अतिथि विदा हो । किंतु उसे ऐसा संकेत दिखाई नहीं पड़ता । पहले मेहमान के लिए बढ़िया भोजन बनाया जाता था । अब खिचड़ी और उपवास तक की स्थिति आ गई है ।

भारतीय परंपरा में अतिथि को देवता माना गया है । लेखक सोचता है देवता तो दर्शन देकर चले जाते हैं । यह अतिथि जाने का नाम क्यों नहीं ले रहा है?

4.0 Vocabulary

अतिथि	guest	अज्ञात	unknown
आगमन	arrival	आशंका	doubt
सतत	continuous	बटुआ	purse
संभावना	possibility	स्नेह-भीगी	affectionate
अंतरंग	intimate	मुस्कराहट	smile
चट्टान	rock	शानदार	great

मेहमाननवाज़ी	hospitality	निर्मूल	baseless
आग्रह	to insist	चादर	bedsheet
अतिथि–सुलभ मुस्कान	pretended smile	सलवटें	wrinkles
		तबादला	transfer
स्वागत–सत्कार	hospitality	सौहार्द	good relation
गरिमा	dignity	शनैः–शनैः	gradually
भावभीनी विदाई	emotional farewell	ऊष्मा	warmth
आघात	shock	बोरियत	boredom
अप्रत्याशित	unexpected	रूपांतरित	transformed
चोट	hurt	चरम–क्षण	climax
मार्मिक	touching	शराफत	gentlemanliness
सदैव	always	खर्राटे	snore
औपचारिक	formal	गुंजायमान	echoed

5.0 GRAMMAR & USAGE

5.1 पर्यायवाची शब्द

चाँद – राकेश, शशि, रजनीश
ज़िक्र – उल्लेख, वर्णन
आघात – हमला, चोट
ऊष्मा – गर्मी, ताप
अंतरंग – घनिष्ठ, आंतरिक

5.2 विलोम शब्द

प्रसन्न –	अप्रसन्न	भय –	निर्भय
नीचे –	ऊपर	पुण्य –	पाप
संभव –	असंभव	अच्छा –	बुरा
आखिरी –	पहली	परिचित –	अपरिचित
सम्मान –	अपमान	आगमन –	प्रस्थान
प्रत्याशित –	अप्रत्याशित		

5.3 Phrases used in the lesson

मिट्टी खोदना = to be humiliated / to make miserable असहाय की मिट्टी खोदने से अच्छा है, उसकी सहायता करना ।

कंधे उचकाना = to shrink shoulders, to disapprove पिता जी के पूछने के बावजूद बेटा कंधे उचकाकर चला गया।

अपनी वाली पर उतरना = to be rude to some one रमेश की खीज इतनी बढ़ गई कि वह अपनी वाली पर उतरने को तैयार हो गया।

पीड़ा पी लेना = to bear the pain अधिकारी द्वारा डाँटे जाने पर सहायक को बुरा तो लगा, किंतु वह अपनी पीड़ा पी गया।

6.0 QUESTIONS & ANSWERS

प्रश्न 1. पाठ के अनुसार 'होम' को 'स्वीट होम' क्यों कहा गया है ?

उत्तर 'होम' को 'स्वीट होम' इसलिए कहा गया है कि लोग दूसरे के 'होम' की 'स्वीटनेस' को काटने न दौड़ें।

प्रश्न 2. अतिथि की कौन-सी बात लेखक को बुरी तरह चुभ गई ?

उत्तर अतिथि का यह वाक्य कि वह लॉन्ड्री में कपड़े देना चाहता है, लेखक को बुरी तरह चुभ गया।

प्रश्न 3. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' कथन में लेखक का क्या आशय है ?

उत्तर अतिथि के अधिक दिनों तक टिक जाने से लेखक परेशान था।

— * —